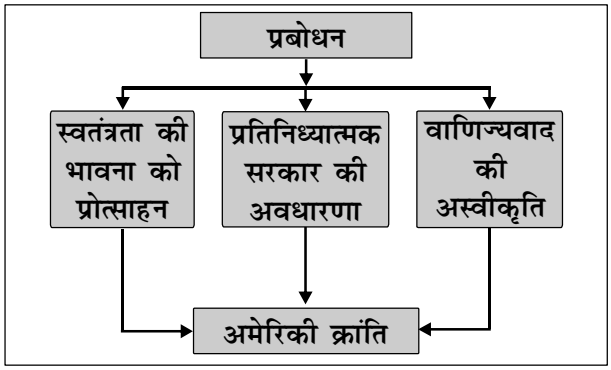

■ **पृष्ठभूमि :**

- अमेरिका क्रान्ति विश्व इतिहास में एक विभाजक रेखा बनकर आयी क्योंकि पहली बार इसने मातृदेश एवं उपनिवेश के सम्बन्धों को पुनर्परिभाषित किया। इसके अतिरिक्त इसके साथ कुछ और भी मुद्दे निहित हैं। प्रथम, प्रबोधन के साथ यूरोप में जो कुछ नवीन वर्गीय मांगें उठी थीं, अमेरिकी क्रान्ति ने उस दिशा में और भी एक कदम बढ़ा दिया। दूसरे, इस क्रान्ति ने विश्व को नये संवैधानिक मॉडल दिये, यथा- संघीय व्यवस्था एवं मौलिक अधिकार के प्रावधान। अन्त में, इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप यूरोप से पश्चिम एक आर्थिक एवं राजनीतिक महाशक्ति का उद्भव हुआ जिसने विश्व इतिहास में निर्णायक भूमिका निभायी।

■ **उत्तरी अमेरिका का तत्कालीन स्वरूप:**

- उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में ब्रिटिश, डच एवं फ्राँसीसियों द्वारा अपने-अपने उपनिवेश स्थापित किये गए थे। जहाँ फ्रांसीसियों ने कनाडा के क्षेत्र का औपनिवेशीकरण किया, वहीं अंग्रेजों द्वारा उत्तरी अमेरिका के पूर्वी भाग में 13 उपनिवेश स्थापित किये गए थे। वस्तुतः अमेरिकी क्रान्ति से आशय है उत्तरी अमेरिका के पूर्वी भाग में स्थापित ब्रिटिश के 13 उपनिवेशों के विद्रोह।

■ **इन 13 उपनिवेशों के साथ ब्रिटेन के क्या सम्बन्ध थे?**

- ब्रिटेन ने इस क्षेत्र में 1620 ई. से उपनिवेश स्थापित करने आरम्भ कर दिये थे। फिर 13 अलग-अलग उपनिवेश स्थापित किये, प्रत्येक उपनिवेश को पृथक-पृथक चार्टर प्रदान किया। प्रत्येक उपनिवेश में पृथक गवर्नर तथा पृथक विधानमण्डल का प्रावधान था। उस विधानमण्डल में क्षेत्रीय कुलीनों को प्रतिनिधित्व मिलता था तथा गवर्नर विधानमण्डल के सहयोग से शासन करता था। इस प्रकार, व्यावहारिक रूप में ब्रिटिश अमेरिकी उपनिवेश के लोगों को कहीं अधिक राजनीतिक स्वायत्तता प्राप्त थी। यह भी एक कारण था कि जब उन पर अधिक नियन्त्रण लगाने का प्रयास किया गया तो वे इसे सहन नहीं कर पाये। गौर करने वाली बात यह है कि अमेरिकी उपनिवेश 13 भागों में बंटे थे, जबकि भारत पर ब्रिटेन ने एक संगठित साम्राज्य के रूप में शासन किया था।

■ **ब्रिटिश-अमेरिकी समाज की संरचना क्या थी?**

- ब्रिटिश-अमेरिकी समाज विभिन्न स्तरों पर विभाजित था। कुलीन, जिन्होंने भूमि संपदा पर नियंत्रण स्थापित किया था। व्यापारी, तस्कर तथा मध्यवर्ग के अन्य लोग भी उज्ज्वल भविष्य की खोज में इस अंजान महाद्वीप पर आ गए थे। उत्तरी अमेरिका में स्वर्ण धातु की उपलब्धता ने भी कुछ उद्यमियों को आकर्षित किया था। वहीं सजा प्राप्त मुजरिमों को भी यहाँ निर्वासित किया जाता था। उस समय ब्रिटिश समाज में यह मान्यता थी कि अपराध को समाप्त करने का सबसे बेहतर उपाय है अपराधियों को निर्वासित किया जाना। इसके साथ ही, यहाँ निम्न वर्ग के लोग; यथा- किसान, कारीगर भी रहते थे। इन सभी के अलावा यहाँ दासों की भी अच्छी-खासी संख्या थी। वस्तुतः यहाँ कुछ रेड इंडियंस (देशी निवासी) को दास बना दिया गया था, साथ ही अफ्रीका से अश्वेत दासों का भी आयात किया गया था।

■ **अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम- स्वतंत्रता आंदोलन अथवा एक क्रांति :**

- यह सही है कि अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम मातृदेश के विरूद्ध किसी उपनिवेश का प्रथम विद्रोह था तथा इस विद्रोह के पश्चात् उसने स्वतंत्रता हासिल की। फिर यह भी सही है कि आगे घटित फ्राँस की क्रान्ति की तुलना में इस क्रान्ति के मध्य कम रेडिकल (मूल परिवर्तनवाद) परिवर्तन हुए। परन्तु इसे महज स्वतंत्रता संग्राम कहना उचित नहीं है क्योंकि इसने अमेरिकी उपनिवेशों की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के अतिरिक्त उनके राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक ढाँचे में भी परिवर्तन लाया।

■ **अमेरिकी क्रान्ति को मध्यवर्गीय क्रान्ति क्यों कहा जाता है?**

- इसकी निम्नलिखित दो विशेषतायें दिखती हैं जो इसे मध्यवर्गीय क्रान्ति के रूप में स्थापित करती हैं। प्रथम, इस क्रान्ति के मध्य नेतृत्व मध्यवर्ग के हाथों में रहा था। दूसरा, इस क्रान्ति के मध्य जो सुधार और परिवर्तन हुए वे मध्यवर्ग के हितों के अनुकूल थे। उदाहरण के लिए, अमेरिकी संविधान में सार्वत्रिक वयस्क मताधिकार को लागू नहीं किया गया। उसी प्रकार, अधिकारों की सूची में रोजगार प्राप्त करने अथवा भोजन के अधिकार को शामिल नहीं किया गया।

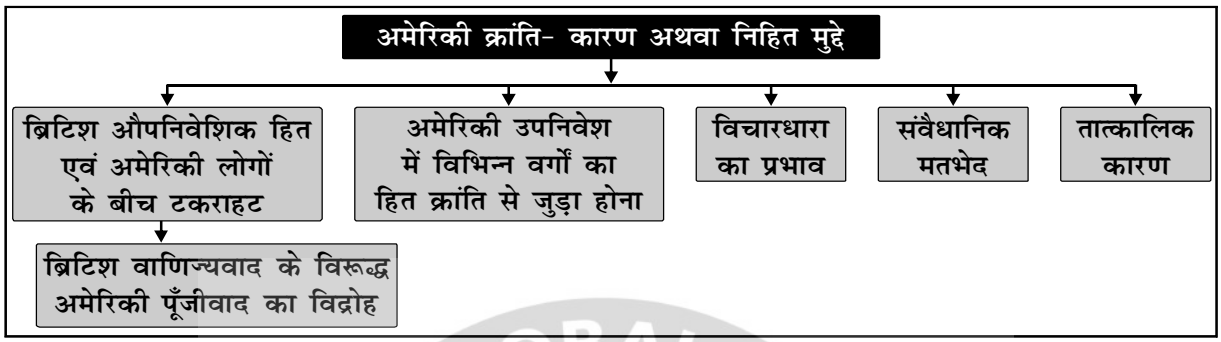

■ **अमेरिकी क्रांति में निहित मुद्दे अथवा अमेरिकी क्रांति के कारण:**

- इस क्रांति के निम्नलिखित प्रमुख कारणों पर विचार किया जा सकता है-

1. **ब्रिटिश औपनिवेशिक हित एवं अमेरिकी लोगों के बीच टकराहट:-** लुई हैकर नामक विद्वान ने इसके पीछे आर्थिक कारक को महत्वपूर्ण माना है तथा उसने यह घोषित किया है कि अमेरिकी क्रान्ति ब्रिटिश वाणिज्यवाद और अमेरिकी पूँजीवाद के बीच टकराहट का परिणाम थी। वाणिज्यवाद अथवा वणिकवाद यह स्थापित करना चाहता था कि उपनिवेश की अर्थव्यवस्था महानगरीय राज्य के आर्थिक हित के अधीन है। इसी सिद्धान्त पर बल देते हुए ब्रिटिश सरकार द्वारा अमेरिकी उपनिवेश के संदर्भ में 17वीं सदी में कई नौपरिवहन कानून (Navigation Act) लाए गए थे। इस कानून के माध्यम से अमेरिकी उपनिवेश के व्यापार को ब्रिटिश नियंत्रण में लाने का प्रयास किया गया। अर्थात् इसके द्वारा यह प्रावधान लाया गया कि अमेरिकी उपनिवेश एशिया, अफ्रीका एवं ब्रिटेन के साथ सभी प्रकार के व्यापार उन जहाजों में ही कर सकते थे जो ब्रिटिश स्वामित्व में हों और जिन पर अधिकांश कर्मचारी ब्रिटिश मूल के हों। फिर विभिन्न अमेरिकी उपनिवेशों के बीच होने वाले व्यापार, अमेरिकी उपनिवेशों के उद्योग, उनके द्वारा किये जाने वाले चावल, तम्बाकू के निर्यात, मुद्रा व्यवस्था सभी पर नियंत्रण लगाने का प्रयास किया गया।

- दूसरी तरफ, अमेरिकी उपनिवेशों की अर्थव्यवस्था तेजी से विकसित हो रही थी। उसके निर्यात व्यापार में लगभग 4 गुनी वृद्धि हो चुकी थी तथा उद्योगों का भी विकास हो रहा था। इसके अतिरिक्त, एक स्वतंत्र जहाजरानी उद्योग विकसित हो रहा था। अत: यह बात लगभग निश्चित थी कि ब्रिटिश वाणिज्यवादी नीति के रहते हुए अमेरिकी पूँजीवाद प्रगति नहीं कर सकता। इसलिए जब जहाजरानी कानून को कड़ाई से लागू करने का प्रयास किया गया तो ब्रिटिश अमेरिकी उपनिवेशों ने विद्रोह कर दिया।

2. **अमेरिकी उपनिवेश में विभिन्न वर्गों का हित क्रांति से जुड़ा होना:-**

- अमेरिकी क्रांति को वर्गीय हित से पृथक करके नहीं देखा जा सकता क्योंकि विभिन्न वर्गों के हित स्पष्ट रूप से क्रांति से जुड़े हुए थे, यथा-
  - अमेरिकी पूँजीपति वर्ग क्रान्ति चाहता था क्योंकि वह ब्रिटिश वाणिज्यवादी नीति से असंतुष्ट था।
  - तस्कर, तस्कर विरोधी कानून से परेशान थे।
  - छात्र और बुद्धिजीवी भी स्वतंत्रता चाहते थे क्योंकि उन पर गणतन्त्रवादी विचारों का प्रभाव था।
  - अमेरिकी राजनेता भी क्रांति चाहते थे क्योंकि वे अपना भविष्य स्वतंत्र अमेरिका में देख रहे थे।
  - वर्जीनिया के तम्बाकू उत्पादक भी स्वतंत्रता के पक्षधर थे, ताकि वे पश्चिम की ओर विस्तार कर खेती के लिए अतिरिक्त भूमि प्राप्त कर सकें।
  - वहीं दूसरी तरफ कुछ ऐसे भी सामाजिक समूह थे जो क्रान्ति के समर्थक नहीं थे। उदाहरण के लिए, कुलीनों के विशेषाधिकार पुरानी व्यवस्था में ही सुरक्षित थे, रेड इण्डियन्स भी अमेरिकी क्रान्तिकारियों की तुलना में ब्रिटिश सरकार के अन्तर्गत ही अपने को अधिक सुरक्षित मानते थे। उसी तरह, मध्यवर्ती अमेरिका के किसान इसलिए क्रान्ति नहीं चाहते थे क्योंकि वे नयी

व्यवस्था की अनिश्चितता से भयभीत थे।

3. **विचारधारा का प्रभावः-**

कुछ विद्वान इस क्रान्ति के लिए वैचारिक, संवैधानिक आदि कारकों को कहीं अधिक प्रभावी मानते हैं। गौरतलब है कि अमेरिकी लोगों का आर्थिक शोषण दीर्घकाल से हो रहा था, परन्तु 1770 के दशक में आकर वे विद्रोह के लिए उतारू हो गए। इस तथ्य की व्याख्या विचारधारा के संदर्भ में की जा सकती है। अमेरिकी बुद्धिजीवियों पर यूरोपीय प्रबोधन का गहरा प्रभाव रहा था। प्रबोधन के प्रभाव में उनमें वाणिज्यवाद के प्रति विद्रोह और मानव तथा व्यक्ति के अधिकारों के प्रति सजगता बढ़ गई। कम से कम दो अमेरिकी बुद्धिजीवी, बेन्जामिन फ्रैंकलिन एवं टॉमस जैफरसन, ने तो यूरोप की यात्रा भी की थी।

4. **संवैधानिक मतभेदः-**

ब्रिटिश एवं अमेरिकी लोगों की संवैधानिक दृष्टि में भी टकराहट थी। ब्रिटिश, पार्लियामेंट की सर्वोच्चता में विश्वास करते थे और यह मानकर चलते थे कि सभी संस्थायें पार्लियामेंट के कानून के अधीन है। वहीं अमेरिकी लोग मानव के प्राकृतिक अधिकार में विश्वास करते थे और यह मानकर चलते थे कि मानव के पास कुछ जन्मजात अधिकार होते हैं, जो सभी संस्थाओं से ऊपर हैं, चाहे वह ब्रिटिश पार्लियामेंट ही क्यों न हो।

5. **तात्कालिक कारणः**- ग्रेनविले सरकार द्वारा ब्रिटिश आर्थिक हित में उठाए गए कुछ कदमों से अमेरिकियों में गहरी नाराजगी थी। वस्तुतः सप्तवर्षीय युद्ध के कारण ब्रिटिश अर्थव्यवस्था पर अत्यधिक दबाव पड़ा था। अतः प्रधानमंत्री ग्रेनविले ने ब्रिटिश आर्थिक हित में अमेरिकी उपनिवेशों को उपयोग करने की व्यावहारिक योजना बनायी, जो इस प्रकार थी-

   1. नौपरिवहन कानून को कठोरता से लागू करने का निर्णय लेना।
   2. तस्करी विरोधी कानून को भी कठोरता से लागू करने का प्रयास।
   3. अतिरिक्त रकम प्राप्त करने के लिए स्टाम्प एक्ट एवं शुगर एक्ट के तहत नये प्रकार के करों को लागू करना।

- **अमेरिकी उपनिवेशों की प्रतिक्रिया तथा क्रान्ति की पृष्ठभूमि निर्मित**- 13 अमेरिकी उपनिवेशों में 9 उपनिवेशों के प्रतिनिधि न्यूयॉर्क में एकत्रित हुए और उन्होंने नारा दिया **'प्रतिनिधित्व के बिना कर नहीं'**। दूसरे शब्दों में, उनका आशय था कि चूँकि अमेरिकी प्रतिनिधि ब्रिटिश पार्लियामेंट में नहीं बैठते, इसलिए ब्रिटिश पार्लियामेंट को अमेरिकी उपनिवेशों पर बाह्य कर (चुंगी) लगाने का तो अधिकार है, परन्तु आन्तरिक कर (उत्पाद शुल्क) लगाने का अधिकार नहीं है। फिर, क्रमिक रूप से घटित घटनाओं के परिणामस्वरूप 1783 ई. तक अमेरिकी उपनिवेश स्वतंत्र हो गये।

■ **'प्रतिनिधित्व के बिना कर नहीं' नारे का महत्त्वः**

1. इस नारे ने महानगरीय राज्य तथा उपनिवेश दोनों के मौलिक संबंधों पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया। दूसरे शब्दों में, चूँकि ब्रिटिश संसद अमेरिकी लोगों का प्रतिनिधित्व नहीं कर रही थी, अतः उसे अमेरिकी बस्तियों पर आन्तरिक कर लगाने का अधिकार नहीं था।
2. यह नारा स्वयं ब्रिटिश संसद में प्रचलित विरोध के तरीकों के अनुरूप था। सम्पूर्ण 17वीं शताब्दी में ब्रिटिश नेता इसी अधिकार की माँग करते रहे थे और फिर इसी मुद्दे पर ब्रिटिश पार्लियामेंट और राजतंत्र के बीच एक गृहयुद्ध भी हो चुका था।
3. अमेरिकी उपनिवेश के द्वारा प्रतिनिधित्व की माँग अपने आप में विशिष्ट थी क्योंकि यह माँग एक उपनिवेश के द्वारा उस समय की जा रही थी जब यूरोप के अधिकांश क्षेत्र में भी लोग प्रतिनिधित्व से वंचित थे।
4. इसने भविष्य में उपनिवेश विरोधी आंदोलनों के लिये एक प्रेरणा स्त्रोत का काम किया। भारत में भी कांग्रेस के नेताओं ने ब्रिटिश के समक्ष यह माँग रखी।

प्रश्नः 'अमेरिकी क्रांति वणिकवाद के विरूद्ध आर्थिक विद्रोह थी।' इस कथन की पुष्टि कीजिए।

(UPSC-2013, GS)

उत्तरः- अमेरिकी क्रांति राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए आंदोलन मात्र नहीं थी, अपितु एक आर्थिक क्रांति भी थी। इसने इस वणिकवादी अवधारणा को अस्वीकार कर दिया कि उपनिवेश मातृदेश के हित के लिए अर्थ रखता है। चूंकि यूरोपीय मध्यवर्ग के द्वारा भी वणिकवादी नीति का विरोध किया जा रहा था। इसलिए अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन ने एक मध्यवर्गीय क्रांति का रूप ले लिया।

1776 ई. में ही एडम स्मिथ के द्वारा 'वेल्थ ऑफ नेशन्स' का प्रकाशन, (जिसमें वाणिज्यवाद को अस्वीकार किया गया था) तथा अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन का साथ-साथ घटित होना महज संयोग नहीं हो सकता, अपितु दोनों का संबंध वणिकवादी नीति के विरोध से था। अमेरिकी विद्रोहियों को 17वीं सदी के नौपरिवहन कानून के विरूद्ध गहरी आपत्ति थी। ये कानून वणिकवादी नीति के क्रियान्वयन के ही प्रयास थे। वस्तुतः 1651, 1660, 1666 तथा 1673 में लाए गए कानूनों का लक्ष्य था अमेरिकी व्यापार को पूरी तरह ब्रिटिश औपनिवेशिक हित के अधीन करना। इनमें कई तरह के प्रावधान निहित थे।

उदाहरण के लिए, अमेरिकी बस्तियाँ केवल ब्रिटिश अथवा अमेरिकी जहाजों में ही वस्तुओं का आयात-निर्यात कर सकती थीं। इतना ही नहीं, उन जहाजों पर काम करने वाले अधिकतर कर्मचारी ब्रिटिश होने चाहिए थे। सबसे बढ़कर एक बस्ती से दूसरी बस्ती में भेजी जाने वाली सामग्रियों को विदेश व्यापार की संज्ञा दी गई तथा उन पर ब्रिटिश सरकार के द्वारा चुंगी लगाना अनिवार्य कर दिया गया। हालांकि ये कानून 17वीं सदी में लाए गए थे, किंतु इनका कड़ाई से अनुपालन 1770 ई. के दशक में किया गया। अत: अमेरिकी मध्यवर्ग ने इस व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह करते हुए 'प्रतिनिधित्व के बिना कर नहीं' का नारा दिया। आगे यही नारा यूरोप के उदारवादियों का प्रमुख एजेंडा बन गया। इस तरह अमेरिकी क्रांति एक आर्थिक विद्रोह बन कर आई तथा फिर यह राजनीतिक स्वतंत्रता की ओर बढ़ गई।

■ **अमेरिकी क्रान्ति का महत्व:-**

1. यह क्रांति उपनिवेशवाद विरोधी आन्दोलन का प्रतीक बन गयी तथा इसने स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत अन्य उपनिवेशों को भी प्रेरणा प्रदान की।
2. लिखित संविधान पर आधारित आधुनिक राष्ट्र का निर्माण हुआ।
3. अभी यूरोपीय सरकारें प्रबुद्ध राजतंत्र के मॉडल पर ही थीं, परन्तु संयुक्त राज्य अमेरिका गणतन्त्र के स्तर पर पहुँच गया।
4. संयुक्त राज्य अमेरिका ने संघीय व्यवस्था के रूप में विश्व के बहुभाषा-भाषी, बहुनस्लीय तथा बहुसाम्प्रदायिक देशों के लिए सरकार का एक नया मॉडल प्रस्तुत किया।
5. संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपने संविधान में मौलिक अधिकार का प्रावधान लाकर व्यक्ति एवं मानव के अधिकारों की अवधारणा को बल प्रदान किया।
6. इसने अमेरिका के साथ-साथ यूरोप को भी रूपान्तरित किया। ब्रिटेन में राजतंत्र की शक्ति को धक्का लगा तथा संसदीय शासन व्यवस्था को बल मिला। इसने फ्रांस की क्रान्ति में भी अप्रत्यक्ष योगदान दिया।

प्रश्न: अमेरिकी क्रांति ने अमेरिका के साथ-साथ यूरोप को भी रूपांतरित किया। इस कथन पर प्रकाश डालिये।

प्रश्न विश्लेषण: *यह प्रश्न अपने स्वरूप में 'Hypothetical' है। इसे महज विचार एवं उदाहरणों से सिद्ध करना है।*

उत्तर: अमेरिकी क्रांति ने न केवल अमेरिका पर, वरन् यूरोप पर भी प्रभाव छोड़ा। इसने अमेरिका एवं यूरोप दोनों ही क्षेत्रों में मध्य वर्ग की शक्ति को सुदृढ़ कर आगे के परिवर्तन का मार्ग तैयार कर दिया।

अमेरिकी क्रांति के फलस्वरूप अमेरिका को स्वतंत्रता प्राप्त हुई तथा उसका प्रजातांत्रिक रूपांतरण हुआ। 1789 में अमेरिकी संविधान लागू हुआ, जो विश्व का पहला लिखित संविधान था। संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व के प्रथम आधुनिक गणतंत्र के रूप में स्थापित हुआ। सरकार की नई पद्धति के रूप में संघीय व्यवस्था को लागू किया गया। अमेरिकी संविधान की प्रस्तावना 'हम अमेरिकी लोग (We the people of America)...' जैसे शब्दों से आरंभ हुई। 1791 के पश्चात् अमेरिका, जनता को धार्मिक एवं अंत:करण की स्वतंत्रता प्रदान करने वाला विश्व का पहला देश बन गया। उसी प्रकार अमेरिकी क्रांति ने शाही समाज तथा कुलीनतंत्र के विशेषाधिकार को करारा झटका दिया।

अमेरिका के अतिरिक्त अमेरिकी क्रांति ने यूरोप को भी प्रभावित किया। इस क्रांति के पश्चात् यूरोप में प्रजातांत्रिक विचारों को बल मिला। यूरोप के मध्य वर्ग ने इस क्रांति का दिल खोलकर स्वागत किया। इसका सबसे गहरा प्रभाव फ्राँस पर देखा गया। इसने फ्राँसीसी जनमानस पर गहरा प्रभाव डाला तथा उसे क्रांति के लिये प्रोत्साहित किया। इससे स्वयं ब्रिटेन भी प्रभावित हुआ। ब्रिटिश संसद का प्रजातंत्रीकरण आरंभ हुआ तथा आयरलैंड के संबंध में नीति बदली गई। साथ ही, इसने अन्य श्वेत बहुल उपनिवेशों के संबंध में भी ब्रिटिश नीति को परिवर्तित कर दिया।

प्रश्न: 'अमेरिकी क्रांति के साथ ब्रिटेन ने जहाँ एक साम्राज्य को खो दिया, वहीं दूसरे साम्राज्य को प्राप्त कर लिया।' इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिये।

प्रश्न विश्लेषण: *यह प्रश्न अपने स्वरूप में 'Hypothetical' है। 'Hypothetical' से तात्पर्य है कि संबंधित कथन को विचार एवं उदाहरण से स्पष्ट करना है, न कि सत्य अथवा परीक्षण करना। एक साम्राज्य का आशय ब्रिटिश अमेरिकी उपनिवेश है, तो दूसरे साम्राज्य का आशय 'भारत'। उत्तर में प्रथम वाक्य परिचयात्मक वाक्य होता है, परंतु यही वाक्य उत्तर की दिशा भी तय करता है।*

उत्तर: अमेरिकी क्रांति ब्रिटिश साम्राज्यवाद के इतिहास में एक भूचिह्न (Landmark) बनकर आई। इस क्रांति के पश्चात् ब्रिटेन ने ब्रिटिश क्रॉउन के सबसे कीमती आभूषण के रूप में अमेरिकी उपनिवेश को खो दिया, परंतु एक दूसरे कीमती आभूषण के रूप में भारत को प्राप्त कर लिया।

17वीं सदी में अमेरिकी उपनिवेशों का ब्रिटिश साम्राज्य के लिये क्या महत्त्व था, इस बात का अनुमान उन नौपरिवहन कानूनों, जो ब्रिटिश सरकार के द्वारा अमेरिकी उपनिवेशों के संदर्भ में लाये गये थे, से किया जा सकता है। ये नौपरिवहन कानून यह सिद्ध करते हैं कि ब्रिटिश साम्राज्य के लिये अमेरिकी उपनिवेशों की अर्थव्यवस्था का व्यापक महत्त्व था। यह एक

महत्त्वपूर्ण कारण था कि जब तक ब्रिटिश के पास अमेरिकी उपनिवेश सुरक्षित रहे, उन्होंने भारत की ओर ध्यान नहीं दिया।

वहीं अमेरिकी उपनिवेशों के निकलने के साथ ही ब्रिटिश पार्लियामेंट का ध्यान सीधे तौर पर भारत की ओर गया। 1783 ई. की पेरिस की संधि के आधार पर अमेरिकी उपनिवेश स्वतंत्र हो गए। उसके शीघ्र बाद ब्रिटिश पार्लियामेंट में भारत के संदर्भ में 1784 में पिट्स इंडिया एक्ट पारित किया गया। इस एक्ट के तहत भारतीय प्रशासन के निरीक्षण के लिये एक 'बोर्ड ऑफ कंट्रोल' का गठन किया गया। इसके अतिरिक्त 1786 में नए गवर्नर जनरल के रूप में लॉर्ड कॉर्नवालिस को भेजा गया। कॉर्नवालिस के सुधारों का उद्देश्य भारत पर ब्रिटिश नियंत्रण को मज़बूत बनाना था।

इस प्रकार अमेरिकी क्रांति ने साम्राज्यवाद के मोर्चे पर ब्रिटिश प्राथमिकता को बदल दिया।

- **अमेरिकी उपनिवेशों की स्वतंत्रता के पश्चात् संविधान निर्माण की चुनौतीः-**

- स्वतंत्रता के पश्चात् अमेरिकी लोगों के समक्ष यह एक बड़ा ही चुनौतीपूर्ण मुद्दा था कि इन 13 उपनिवेशों के बीच आपसी ताल-मेल कैसे हो? इसका कारण था इन 13 उपनिवेशों का एक-दूसरे से बिल्कुल ही पृथक होना। इसलिए आगे जो भी निर्णय होना था, वह आपसी सहमति से होना था। अंत में, एक संविधान बनना तय हुआ। परंतु इस संविधान निर्माण के मध्य भी कई चुनौतियाँ उपस्थित थीं, जो इस प्रकार थीं-

1. अमेरिकी उपनिवेशों में बड़े व्यापारी, बैंकर ये सभी **शक्तिशाली संघीय सरकार** चाहते थे अर्थात् एक ऐसी सरकार जो उनके हितों का संरक्षण कर सके। वहीं किसान, छोटे व्यापारी, कारीगर आदि इस बात से भयभीत थे कि शक्तिशाली केंद्रीय सरकार बलपूर्वक कर वसूल करेगी। अंत में, दोनों के बीच समझौते का बिंदु लाते हुए 1789 की फिलाडेल्फिया कांग्रेस में एक नए संविधान को अपनाया गया। इस संविधान में एक संघीय सरकार का प्रावधान लाया गया। परंतु दूसरी तरफ अन्य वर्गों को खुश करने के लिए 1791 में संविधान में संशोधन कर 10 मौलिक अधिकारों को बहाल कर दिया गया और सुप्रीम कोर्ट को उनका रक्षक बनाया गया।
2. एक विवाद **बड़े राज्य तथा छोटे राज्यों** के बीच था। बड़े राज्य अमेरिकी विधानमंडल में जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व चाहते थे, वहीं छोटे राज्य राज्यों की समानता की माँग कर रहे थे। अंत में यह तय हुआ कि अमेरिकी विधानमंडल (कांग्रेस) में दो सदन होंगे। प्रथम सदन सीनेट में सभी राज्यों के बीच समानता की अवधारणा को स्वीकार करते हुए उन्हें दो प्रतिनिधियों को भेजने का अधिकार होगा, वहीं निम्न सदन हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव में प्रत्येक राज्य को जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व मिलेगा।
3. एक तरफ संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिण राज्य चाहते थे कि प्रतिनिधि सभा में इन राज्यों को जो प्रतिनिधित्व मिले उसके लिए दासों की भी गणना की जाए, परंतु उत्तरी अमेरिकी राज्य इसका विरोध कर रहे थे। अंत में **दासों की गणना का प्रावधान** तो रखा गया, परंतु उसका वजन (मूल्य) स्वतंत्र नागरिक से कम रखा गया।

क्रांति की सीमाएं -

1. अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा दासों पर लागू नहीं हुई तथा दास व्यवस्था पूर्ववत् कायम रही। आगे दास व्यवस्था के उन्मूलन के लिए अमेरिकी उपनिवेशों को एक गृहयुद्ध लड़ना पड़ा।
2. अमेरिकी क्रांति पर मध्यवर्ग का वर्चस्व बना रहा। कुछ जगहों पर श्रमिक, कारीगर तथा बेरोजगार लोग ज्यादा हिंसक होने लगे थे और अधिक स्वतंत्रता की मांग करने लगे थे, तो मध्यवर्गीय नेतृत्व ने बड़ी चालाकी से उन्हें अपने प्रभाव क्षेत्र में ले लिया तथा उनकी आर्थिक मांगों को स्वतंत्रता के लक्ष्य की ओर मोड़ दिया।
3. मध्यवर्गीय प्रभाव के कारण ही यूएसए के संविधान में सीमित लोगों को मताधिकार मिला, जनसामान्य एवं महिलाएँ उससे वंचित रहीं।

प्रश्न- अमेरिकी क्रांति ने आधुनिक विश्व की आधारशिला रखी। टिप्पणी कीजिए।

प्रश्न विश्लेषण*- यह प्रश्न अपने स्वरूप में 'Hypothetical' है। उपर्युक्त कथन के साथ सहमति जताने की जरूरत है। 'Key words' हैं 'आधुनिक विश्व' एवं 'आधारशिला'। 'आधुनिकता' से आशय है राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र में प्रगतिशील परिवर्तन।*

उत्तर- प्रबोधन के साथ आधुनिकता की जो प्रक्रिया आरम्भ हुई थी, उसे अमेरिकी क्रांति ने आगे बढ़ाया। एक दृष्टि से अमेरिकी क्रांति प्रबोधन के विचारों का क्रियान्वयन थी। अपने प्रभाव में भी यह वैश्विक रही थी। अर्थात् फिर इसके द्वारा लाये गए बदलावों ने न केवल यूरोप पर, अपितु अन्य महाद्वीपों पर भी अपना प्रभाव छोड़ा। इसने निम्नलिखित रूप में आधुनिकता को प्रोत्साहन दिया-

- **वाणिज्यवाद एवं उपनिवेशवाद की अस्वीकृति**- यह उपनिवेशवाद-विरोधी आन्दोलन का प्रतीक बन गयी।

इसका तात्कालिक प्रभाव लैटिन अमेरिका के स्वतंत्रता आन्दोलन पर देखा गया।

- **संविधानवाद एवं प्रतिनिध्यात्मक सरकार की स्थापना**– इस क्रांति का एक महत्वपूर्ण परिणाम था पहले आधुनिक लिखित संविधान तथा निर्वाचित सरकार की स्थापना।
- **मानव एवं व्यक्ति के अधिकारों का संरक्षक**– अपने नागरिकों के लिए मौलिक अधिकारों को स्वीकृति देने वाला यूएसए पहला राष्ट्र बना।
- **गणतंत्रवाद का अग्रदूत**– अभी यूरोपीय देश संवैधानिक राजतंत्र के स्तर पर ही थे, जबकि अमेरिकी लोग गणतंत्र की अवस्था में पहुँच गए।
- **संघीय व्यवस्था**– अमेरिकी लोगों ने विशाल आकार एवं बहुलवादी स्वरूप वाले देशों के लिए सरकार का एक नया मॉडल प्रस्तुत किया।

सबसे बढ़कर अमेरिकी क्रांति के विचार फ्रांस, यूरोप एवं लैटिन अमेरिकी देशों से होते हुए एशिया महाद्वीप तक पहुँच गए।

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

अधूरे एजेंडे को पूरा करने का प्रयास (अमेरिकी गृहयुद्ध)

- अमेरिकी स्वतंत्रता दासों पर लागू नहीं थी।
- अमेरिकी संघ आंतरिक रूप में विभाजित क्योंकि अमेरिकी कांग्रेस में दास राज्यों की स्थिति अधिक मजबूत।
- संयुक्त राज्य अमेरिका आर्थिक रूप में विभाजित, उत्तर में पूँजीवादी मॉडल, जबकि दक्षिण में दास व्यवस्था पर आधारित बागवानी खेती।

■ अमेरिकी गृहयुद्ध और संयुक्त राज्य अमेरिका का रूपांतरण:

- किसी विध्वंसात्मक घटना के द्वारा एक बड़ा रचनात्मक प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है, इसका उदाहरण है अमेरिकी गृहयुद्ध। शायद ही अमेरिकी राष्ट्र के समक्ष इतनी बड़ी चुनौती उपस्थित हुई होगी जितनी कि हम गृहयुद्ध के रूप में पाते हैं। परंतु इस घटना ने संयुक्त राज्य अमेरिका को रूपांतरित कर एक आधुनिक राष्ट्र के रूप में स्थापित कर दिया।
- **दास व्यवस्था का उन्मूलन**- उत्तरी अमेरिकी राज्य दास व्यवस्था का उन्मूलन चाहते थे, वहीं दक्षिणी अमेरिकी राज्य इसका विरोध कर रहे थे। हालांकि अमेरिकी गृहयुद्ध दास व्यवस्था के उन्मूलन के मुद्दे पर हुआ था, परंतु दास व्यवस्था तो महज एक ऊपरी कारण था, वास्तविक कारण तो आर्थिक और संवैधानिक था।
- **आर्थिक मुद्दा**- उत्तरी अमेरिकी राज्यों में औद्योगीकरण आरंभ हो गया था, इसीलिए उत्तरी अमेरिकी राज्य दास व्यवस्था का उन्मूलन चाहते थे क्योंकि दास व्यवस्था औद्योगीकरण की आवश्यकता के अनुकूल नहीं होती। वहीं दक्षिण अमेरिकी राज्यों की अर्थव्यवस्था बागवानी खेती पर निर्भर थी और दास श्रमिक के बिना बागवानी खेती का संचालन संभव नहीं था।
- **संवैधानिक मुद्दा**- इसके अतिरिक्त यूएसए का पश्चिम की ओर विस्तार हो रहा था तथा नए-नए क्षेत्र राज्य के रूप में शामिल हो रहे थे। वहाँ भी दक्षिण के दास राज्य चाहते थे कि नए क्षेत्रों को दास राज्य के रूप में शामिल किया जाए, ताकि अमेरिकी कांग्रेस के निम्न सदन में दास राज्यों की स्थिति मजबूत बनी रहे। उत्तरी अमेरिकी राज्य इसका विरोध कर रहे थे।
- इन दोनों पक्षों के बीच समझौता कराने का तमाम प्रयास विफल हो रहा था। अत: अब प्रश्न यह था कि यूएसए का भविष्य किस ओर जाएगा, पूँजीवाद की ओर अथवा दास श्रम पर आधारित भूस्वामी के हित में या महज यूरोपीय देशों के कच्चे माल का उत्पादक बन कर रह जाएगा।
- **तात्कालिक कारण**- रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार अब्राहिम लिंकन के अमेरिकी प्रेसिडेंट के रूप में निर्वाचन ने यूएसए को गृहयुद्ध की कगार पर ला दिया क्योंकि अब्राहिम लिंकन ने अपने चुनावी घोषणा-पत्र में यह स्पष्ट कर दिया था कि उनका लक्ष्य दास व्यवस्था का उन्मूलन करना तथा उत्तरी अमेरिकी उद्योगों को संरक्षण देना है। अब यूएसए के 11 राज्य (उस समय राज्यों की संख्या 34) संघ से पृथक् होकर अपना एक अलग संघ बनाने का प्रयास किया। परन्तु अब्राहम लिंकन ने 'राज्य संप्रभुता' की

अवधारणा को अस्वीकार करते हुए दक्षिणी राज्यों के इस कदम को असंवैधानिक करार दिया। उसने यह घोषित किया कि अगर 'अमेरिकी राज्य अविभाज्य हैं, तो अमेरिकी संघ भी अविभाज्य है।' फिर उसने गृहयुद्ध दास व्यवस्था के उन्मूलन के नाम पर नहीं, बल्कि अमेरिकी संघ की रक्षा के नाम पर लड़ा। यद्यपि यह दूसरी बात है कि उसने गृहयुद्ध के मध्य ही दास व्यवस्था का उन्मूलन कर दिया। यह गृहयुद्ध 1861 में आरंभ होकर 1865 तक चला। आरंभ में दक्षिण अमेरिकी राज्यों का पलड़ा भारी था, परंतु आगे उत्तरी अमेरिकी राज्यों का पलड़ा भारी हो गया और वे गृहयुद्ध जीत गए। अंत में, 1877 के लुसियाना पैक्ट के आधार पर उत्तरी और दक्षिणी राज्य फिर एक हो गए। इस प्रकार, एक राष्ट्र के रूप में यूएसए सुरक्षित रहा।

■ **अमेरिकी गृहयुद्ध का अमेरिकी राष्ट्र पर निम्नलिखित रचनात्मक प्रभाव देखा गया:**

1. **एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में यूएसए का उद्भव**- गृहयुद्ध के पश्चात् दक्षिण अमेरिकी राज्यों में भी औद्योगीकरण का प्रसार हुआ। फिर अमेरिकी सरकार के द्वारा अमेरिकी उद्योगों को संरक्षण दिया गया। लगभग 8 दशकों तक इस संरक्षणवादी नीति पर चलते हुए यूएसए विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित हो गया। फिर, रेलवे के प्रसार ने यूएसए को उत्तर से लेकर दक्षिण तक आपस में जोड़ दिया। इससे भी औद्योगीकरण को प्रोत्साहन मिला। इस प्रकार, यूएसए का आर्थिक एकीकरण हुआ तथा वहाँ तेजी से पूंजीवाद का विकास हुआ।
2. **अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के बीच यूएसए को एक सम्मानजनक स्थिति प्राप्त होना** - जब तक यूएसए में दास व्यवस्था कायम रही थी यूरोपीय राष्ट्रों के द्वारा इसकी आलोचना की जाती रही, परंतु गृहयुद्ध के पश्चात् संविधान में 13वें संशोधन के आधार पर दास व्यवस्था का उन्मूलन कर दिया गया। फिर 14वें और 15वें संशोधन के आधार पर अमेरिकी दासों को नागरिक एवं राजनीतिक अधिकार भी प्राप्त हुए। इस प्रकार, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में यूएसए की स्थिति सुधर गई और आगे वह मानव अधिकारों के रक्षक के रूप में स्थापित हुआ।

■ **सीमा:**

- संवैधानिक और नागरिक अधिकारों की स्वीकृति के बावजूद आज भी अमेरिकी जीवन में अश्वेतों को समानता का अधिकार नहीं मिला है। श्वेतों के द्वारा अश्वेत पर नस्लवादी हमला और पुलिस मुठभेड़ में अश्वेतों का मारा जाना एक आम घटना हो गई है।

प्रश्न:- 'अमेरिकी गृहयुद्ध, अमेरिकी क्रांति के अधूरे एजेंडे को पूरा करने की दिशा में एक बड़ा कदम था।' इस कथन का परीक्षण कीजिए।

उत्तर:- अमेरिकी गृहयुद्ध जैसी विध्वंसात्मक घटना का व्यापक रचनात्मक प्रभाव देखा गया। इसने निम्नलिखित रूप में अमेरिकी क्रांति के अधूरे एजेंडे को पूरा किया-

- **स्वतंत्रता की घोषणा का विस्तार**- अमेरिकी क्रांतिकारियों के द्वारा स्वतंत्रता की घोषणा की गयी, परन्तु उनकी घोषणा दासों पर लागू नहीं होती थी। अमेरिकी गृहयुद्ध ने उसे दासों पर भी लागू किया। उदाहरण के लिए, 13वें संविधान संशोधन के आधार पर दास व्यवस्था का उन्मूलन और 14वें एवं 15वें संशोधन के आधार पर दासों को नागरिक और राजनीतिक अधिकार दिया जाना।
- **अमेरिकी संघ का मजबूत होना**- अमेरिकी क्रांति के पश्चात् अमेरिकी संघ में एक प्रकार का असंतुलन उत्पन्न हो गया था क्योंकि कांग्रेस के निम्न सदन- हाउस ऑफ रिप्रजेन्टेटिव में दास राज्यों का वजन बढ़ जाने का खतरा था। यह राज्यों की समानता की अवधारणा के विपरीत जा रहा था, परन्तु दास व्यवस्था के उन्मूलन के पश्चात् वह मुद्दा समाप्त हो गया।
- **एक पूँजीवादी आन्दोलन के रूप में**- संयुक्त राज्य अमेरिका आर्थिक रूप में विभाजित रहा था। एक तरफ उत्तरी राज्यों में औद्योगीकरण प्रगति पर था, वहीं दक्षिणी अमेरिकी राज्यों में दास व्यवस्था पर आधारित बागवानी खेती प्रचलित थी। परन्तु, जब दास व्यवस्था का उन्मूलन हो गया, तो दक्षिणी अमेरिकी राज्य भी बागवानी खेती की जगह औद्योगीकरण की दिशा में बढ़ गए। इस कारण संयुक्त राज्य अमेरिका का आर्थिक एकीकरण हो गया।

फिर वही समय है जब उत्तर से दक्षिण तक संयुक्त राज्य अमेरिका में रेलवे तथा आधुनिक यातायात एवं संचार के साधनों का विकास हुआ। हाइवे एवं सुपर हाइवे स्थापित किए गये।

सबसे बढ़कर संयुक्त राज्य ममेरिका की सरकार को अपने उद्योगों को संरक्षण देने की स्वतंत्रता मिली। यह एक दिलचस्प तथ्य है कि जब विश्व के अन्य क्षेत्रों में मुक्त व्यापार की नीति को बढ़ावा दिया जा रहा था, तब अमेरिकी सरकार ने संरक्षणवादी नीति अपनाकर अमेरिकी अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन दिया और फिर यह दुनिया की सबसे बड़ी आर्थिक महाशक्ति बन गया।

इसलिए, अमेरिकी गृहयुद्ध को एक पूँजीवादी आन्दोलन की संज्ञा दे सकते हैं।

मॉडल प्रश्न:

1. अमेरिकी गृहयुद्ध अमेरिकी क्रांति का दूसरा चरण था। परीक्षण कीजिए।
2. अमेरिकी गृहयुद्ध एक पूँजीवादी आन्दोलन था। सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

Food for Thought

- अमेरिकी क्रांति भी अन्य देशों के स्वतंत्रता आंदोलन की तरह महज एक स्वतंत्रता आंदोलन था, परंतु अमेरिकी क्रांति के मध्य ऐसा क्या हुआ कि इसे क्रांति का दर्जा प्राप्त हुआ?
- क्या अमेरिकी क्रांति की क्रांतिकारिता अमेरिकी संविधान में निहित थी?
- अमेरिकी संविधान ने संविधानवाद के विकास में अपनी क्या विरासत छोड़ी?

■■■

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR